Set I

IRC – 1 (Anthropology)

Full Marks: 75

Time: 3 Hours

Answer the questions as per instruction given.
प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार दें।

The figure in the right hand margin indicates marks.
उपान्त के अंक पूर्णांक के द्योतक है।
Candidates are required to give answers in their own words as far as possible.
परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

Group A
(Short Answer Type Questions)
(लघु उत्तरीय प्रश्न)
Answer all the following questions.
निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

1. Answer the following questions in one sentence. 5x1=5
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें।
   a) What is taboo?
   टैबू क्या है ?
   b) What do you mean by society?
   समाज से आप क्या समझते हैं?
   c) Define Social-cultural anthropology.
   सामाजिक–सांस्कृतिक मानवशास्त्र को परिभाषित करें।
   d) Define Culture.
   संस्कृति की परिभाषा दें।
   e) What is field work?
   क्षेत्रकार्य क्या है?
2. Define Prehistoric Anthropology? 5
प्रागैतिहासिक मानवशास्त्र को परिभाषित करें।
3. Give a brief introduction of Ethnography? 5
नृवंशविज्ञान का संक्षिप्त परिचय दें?

Group B
(Long/Descriptive Answer Type Questions)
दीर्घ / वर्णनात्मक उत्तरीय प्रश्न
Answer any four of the following questions.
निम्नलिखित में से किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दें।

4. What do you mean by anthropology? Describe its scope. 5+10=15
मानवशास्त्र से आप क्या समझते है? इसके विषयवस्तु का वर्णन करें।
5. Describe meaning and scope of biological anthropology. 5+10=15
जैविक मानवशास्त्र के अर्थ एवं विषय क्षेत्र का वर्णन करें।
6. What do you mean by family? Describe its various types. 5+10=15
परिवार से आप क्या समझते है? इसके विभिन्न प्रकार का वर्णन करें।
7. Define culture and explain aspects and its characteristics 5+5+5=15
संस्कृति को परिभाषित करे और इसके आयामों एवं विशेषताओं का वर्णन करें।
8. Differentiate Culture and Civilization. 15
संस्कृति और सभ्यता में अंतर स्पष्ट करें।
9. Explain field work tradition in Anthropology. 15
मानवशास्त्र में क्षेत्र कार्य परंपरा का वर्णन करें।

Answer:

1. a) जनजातीय समाज में सामाजिक नियंत्रण हेतु निषेध (टैबू) समाज के सदस्यों के द्वारा ब्यवहार में लाया जाता है, जो एक ब्यवस्थित समाज को बनाये रखने के लिए आवश्यक साधन माना जाता है।
   b) समाज व्यक्तियों के वैसे समूह को कहते है जो साथ रहते,काम करते, सुख–दुख में एक दूसरे का साथ देते है। इनके बीच हम की भावना पायी जाती है।
   c) मानवशास्त्र की वो शाखा जिसके अंतर्गत सामाजिक सांस्कृतिक संस्थानों, संगठनों तथा व्यवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।
   d) मानव द्वारा किये गये कार्यों को संस्कृति कहते है जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित एवं सीखी जाती है।
   e) सामाजिक शोध के दौरान क्षेत्र से प्रत्यक्ष अवलोकन एवं विभिन्न वैज्ञानिक प्रविधियों का प्रयोग कर आंकड़ा एकत्रित करने को क्षेत्र कार्य कहते है।
2. मानव जीवन के अलिखित अतीत के जीवन के अस्तिव के अध्ययन को हम प्रागैतिहासिक मानवशास्त्र कहते है। मानव जीवन का 99% भाग इसी काल में बिता है। इस लबें सफर से निकलने में पाषाण युग, ताम्र युग, कांस्य युग, लौह युग (वर्तमान में आणविक युग) को पार किया है। मानव जीवन के इस काल को हम पुरातात्विक विज्ञान के माध्यम से अध्ययन करते है। मानव के पूर्वज क्रमशः ड्रायोपिथिकस–रामापिथिकस–शिवापिथिकस–अस्ट्रेलोपिथिकस–होमोहाबिलिस–होमो इरेक्टस–होमो सेपियंस का हम अध्ययन करते है। इनके जीवन शैली, आखेट, भोजन, संग्रहण, आग का प्रयोग इत्यादि शामिल है। अति वृष्टी एवं हिम युग में गुफा चित्रकारी, स्टोन टूल का प्रयोग मानव अपने जीवन में किस प्रकार किया। प्रागैतिहासिक काल को तीन खंडों में बांटा गया है – क) उच्च पुरापाषाणकाल, ख)मध्यपुरापाषाणकाल, ग)निम्नपुरापाषाणकाल। इन तीन काल में पाषाण के औजार का प्रयोग वातावरण एवं जीवों से सुरक्षा, आखेट के उपयुक्त करने में मानव सक्षम रहा। निम्नपुरापाषाण काल में औजार चौपर, चौपिंग मानव जीवन का सर्वाधिक समय व्यतीत हुआ। पुरातत्व विज्ञान, मानव के प्रागैतिहासिक जीवन की स्पष्टता तथा विकास की आईना का काम किया है।
3. किसी भी जाति–जनजाति की मूल अवधारणाएँ और संस्कृति का गहन अध्ययन नृजातीय अध्ययन कहलाता है। नृजातीय , सामाजिक , समाज के अन्य सांस्कृतिक शोध अनुसंधान में नृजातीय संकल्पना का प्रयोग किया जाता है। यह गुणात्मक एवं शोध की विश्वसनीयता को प्रखर करता है। संस्कृति, लोक कथा, नृत्य, पैतृक स्थल, लोक गीत इत्यादि किसी भी जाति–जनजाति विशेष का अवलोकन कर नृजातीय अध्ययन किया जाता है, जिससे उस समाज और नृजातीयता के छुपे रहस्यमय संस्कृति का पता चलता है। शोध अनुसंधान में अब इसका दायरा विभिन्न क्षेत्रों जैसे – वैश्विकरण, प्रवास, जलवायु परिवर्तन, समाज को जागरूकता लाने में प्रयुक्त होने लगा है। डेटा संग्रहण में शोधकर्ता को अपने विषय से संबंधित साक्षात्कार के समय अवलोकन पर एकाग्रता बिलकुल ही स्पष्ट एवं निष्पक्ष होना चाहिए। व्यक्ति, विशेष–समाज, नृजातीय समाज का डेटा प्राप्त करने में समय अभाव निषेध माना जाता है। गुणवत्तापूर्ण अध्ययन का महत्वपूर्ण औजार नृजातीय संकल्पना के बिना अपूर्ण है। इसलिए इसे गुणात्मक विधि भी कहा जाता है।
4. मानवविज्ञान अंग्रेजी भाषा के एंथ्रोपालॉजी शब्द को हिन्दी रूपांतरण है, जो लैटिन भाषा के एंथ्रोपस एवं लोगस से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है मानव का अध्ययन (study of man)

   मानवविज्ञान मानव का समग्रता में अध्ययन करता है, इसका तात्पर्य यह है कि मानव की उत्पति एवं विकास का अध्ययन करता है। यह मनुष्य एवं समाज से संबंधित है। जहाँ एक ओर यह मनुष्य का शारिरीक अध्ययन करता है वही दूसरी ओर सामाजिक एवं संस्कृति अध्ययन से संबंधित है।

   मानवशास्त्री के अनुसार

   सर्वप्रथम बूजन (1707–1778) ने मानवशास्त्र को एक शाखा के रूप में स्थापित किया। इन्होनें मानव विज्ञान के विभिन्न भागों में विभाजित कर उसके अध्ययन का प्रयास किया। इन्होंने मुख्यतः प्राजातीय अध्ययन, उद्विकासीय इतिहास, उत्पति एवं मानव के शारीरिक लक्षणों की तुलना अन्य प्राणियों से तथा मानव का प्राणि जगत में स्थान विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया।

   हर्षकोविटस के अनुसार "मानव विज्ञान मानव एवं उसके कार्यों का अध्ययन है।

   क्लाइड क्लूकहॉन के अनुसार "मानव विज्ञान मानव का दर्पण है।"

   रूथ बेनेडिक्ट के अनुसार "मानवविज्ञान का उद्देश्य मानवीय विभेदों के लिए विश्व को सुरक्षित बनाना है।"

   मनव विज्ञान का विषय क्षेत्र

   मनव विज्ञान के क्षेत्र से लक्ष्य को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने पर यह ज्ञात होता है कि 19वीं शताब्दी के अंत तक विभिन्न मानव समूहों के रंग–रूप, सरंचना इत्यादि प्रांरभ हो चुका था, जिसमें विशेष रूप से शल्य चिकित्सकों, प्राणी वैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रियों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित हुआ। धीरे–धीरे स्पष्ट होने लगा कि यह मानव का तुलनात्मक विज्ञान है।

   द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मानव विज्ञान के अध्ययन क्षेत्र में काफी वृद्धि हुई, जिसके अंतर्गत मानव के उदभव एवं उदविकास, शारीरिक संरचना (अंगों–उपांगों) में परिवर्तन, मानव पूर्वजों का अध्ययन स्वास्थ्य समस्यायें, प्रजातीय विभेद एवं उनके शारीरिक आधार वंशागति एवं उनके नियम, मानव की विभिन्न प्रजातीयों का अध्ययन, पर्यावरण का प्रभाव, हानिकारक शारीरिक लक्षणों का भावी संतानों पर प्रभाव, शारीरिक लक्षणों की प्रजनन प्रक्रिया एवं उनकी उपयोगिता हानिकारक एवं शारीरिक लक्षणों से बचने का उपाय है।

   होहल ने मानव विज्ञान के क्षेत्र एवं लक्ष्य को निम्न तीन उप–शाखाओं में विभक्त किया है –

   क) मानव उत्पति शास्त्र

ख) मानवमिति
ग) पुरात्व मानव विज्ञान

क) मानव उत्पति शास्त्र – इसके अंतर्गत मानव वंशानुक्रमण संतनोत्पति की प्रक्रिया के अंतर्गत जीन्स में जो परिवर्तन होते हैं तथा उनके शारीरिक लक्षणों पर प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।
ख) मानवमिति – इसके अंतर्गत मानव प्रजातियों का तुलनात्मक अध्ययन एवं मानव शरीर विज्ञान का अध्ययन किया जाता है।
ग) पुरातन मानवविज्ञान – इसके अंतर्गत प्रस्तरीकृत मानवीय अस्थि पंजरों तथा उनके अवशेषों का अध्ययन किया जाता है।

जे0एम0 डईना नामक वैज्ञानिक ने मानव के अध्ययन क्षेत्र को दो भागों में विभक्त किया है –
क) मानव जनसंख्या का अध्ययन तथा विश्लेषण। इसके अंतर्गत विभिन्न मानव समूहों के शरीरिक लक्षणों में अंतर एवं विभेदों का अध्ययन किया जाता है।
ख) उदविकासीय प्रक्रिया के फलस्वरूप उत्पन्न मानव अध्ययन है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मानव विज्ञान वह विज्ञान है जो मानव विभेदीकरण, मानव शरीर का तुलनात्मक अध्ययन एवं उसके कार्यों का अध्ययन किया जाता है।

5.

6. परिवार व्यक्तियों के उस समूह का नाम है जिसमें वे विवाह, रक्त या दत्तक संबंध से संबंधित होकर एक गृहस्थी का निर्माण करते है। ऑगबर्न और निमकॉफ के अनुसार "जब हम परिवार के बारे में सोचते है तो जिसमें कम से कम दो व्यक्तियों द्वारा स्वीकृत यौन संबंध होता है।
मैकाइवर एवं पेज के अनुसार "परिवार पर्याप्त निश्चित यौन संबंध द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चों के जन्म एवं लालन–पालन की व्यवस्था करता है।
क्लेअर थॉमस के अनुसार "परिवार जिसमें माता, पिता व बच्चे होते है। जिसका उद्देश्य सन्तानोत्पति, बच्चों का पालन पोषण, बच्चों की वैधता, समाजीकरण, शिक्षण आदि प्रदान करता है।परिवार समाज की ईकाई है, जिसे माता, पिता, उनकी संतान और सगे संबंधी रहते है।
परिवार दो प्रकार के होते है :
क) एकल परिवार
ख) संयुक्त परिवार

क) एकल परिवार : एकल परिवार में पति, पत्नी एवं उनके अविवाहित बच्चे रहते है। एकल परिवार के अंतर्गत रिश्तेदारों को सम्मिलित नहीं करते है। एकाकी परिवार में बच्चे केवल अविवाहित होने की स्थिति तक ही रह सकते है। जब बच्चों का विवाह हो जाता है, तब वह पृथक एकल परिवार की ओर जाते है। एकल परिवार में सदस्यों की संख्या बहुत ही सीमित होती है। यदि किसी परिवार में पति–पत्नी में से किसी की मृत्यु हो जाती है, तथा परिवार का निकट रिश्तेदार उस परिवार का समस्त दायित्व अपने ऊपर ले लेता है तो वह परिवार भी एकल परिवार की श्रेणी में आता है।
ख) संयुक्त परिवार : संयुक्त परिवार एकल परिवारों से मिलकर बना होता है। इसमें दो या दो से अधिक पीढ़ीयों के लोगों का समूह होता है। इसमें माता, पिता, उनके विवाहित बेटे, उनकी पत्नियां और बच्चे, अविवाहित बेटियां होती है, यह परिवार बड़ा होता है। संयुक्त परिवार के सभी लोग मिलजुलकर रहते हैं। संयुक्त परिवार में एक बड़े बुजुर्ग परिवार के मुखिया होते है तथा एक ही छत के नीचे सभी परिवार रहते है, एक ही चूल्हे पर भोजन करते है, जो सामान्य संपति के अधिकारी होते है। जो सामान्य पूजा–पाठ में भाग लेते है तथा किसी न किसी प्रकार का संबंध रखते है। संयुक्त परिवार जिसमें तीन या इससे अधिक पीढ़ी के लोग आपस में संपति, आय तथा पारस्परिक अधिकार एवं कर्तव्यों में बंधे रहते है।

आई0पी0 देसाई के अनुसार "यदि कई मूल परिवार एक साथ रहते हो उनमें निकट का संबंध हो, एक ही स्थान पर भोजन करते हों और आर्थिक ईकाई के रूप में कार्य करते हो, वो सम्मिलित रूप में संयुक्त परिवार कहा जाता है।"
डॉ0 श्यामाचरण दुबे के अनुसार "संयुक्त परिवार तीन या तीन से अधिक पीढ़ीयों का संगठन है, जिसके सभी सदस्य साथ–साथ एक छत के नीचे रहते है। साथ ही साथ भोजन करते है तथा असीमित उत्तरदायित्व की भावना भी रखते हुए एक आर्थिक ईकाई है।

7. संस्कृति शब्द का प्रयोग बोल–चाल में करता है। संस्कृति वह समग्र है जिसमें खान, पान, वस्त्र, आभूषण, रीति–रिवाज, परम्परा, विश्वास आदि ये संस्कृति का प्रतीक मानते है। हमारे भारतवर्ष में अनेक क्षेत्र के लोग अनेक प्रकार के वस्त्र तथा आभूषण धारण करते हैं। जिसे अपनी संस्कृति का प्रतीक मानते है। हमारे देश के लोग विभिन्न उत्सव तथा त्योहार मानते है तथा अपनी –अपनी संस्कृति से जोड़ते है। संस्कृति सीखी जाती है, तथा संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक हस्तांतरित करता है।
जैसे : अच्छे काम संस्कृति जीवन की विधि हैं। जो हम भोजन खाते हैं, जो कपड़े हम पहनते है। ये सब हमारे संस्कृति है, संस्कृति परिवर्तनशील होता है और यह अलग–अलग समाज में भिन्न होती है।
टायलर महोदय ने संस्कृति को निम्नलिखित दो बाते बताई है।

1. संस्कृति एक जटिल समग्रता है, तथा
2. संस्कृति एक समाजिक विरासत है।

मानवशास्त्र में संस्कृति शब्द को सर्वप्रथम परिभाषित करने का श्रेय ब्रिटिश उद्विकासवादी मानवशास्त्री (एडवर्ड बर्नेट टायलर) को जाता है। सन् 1871 ई0 में टायलर ने संस्कृति को परिभाषित किये है।

दूसरे मानवशास्त्री (बी.के.मैलिनोवस्की) ने सन 1944 ई0 में साईंटिफिक थ्योरी ऑफ कल्चर में संस्कृति को मानव की आवश्यकता पूर्ति के साधन के रूप में परिभाषित किया है।

संस्कृति दो प्रकार के होती है।

1. भौतिक संस्कृति तथा
2. अभौतिक संस्कृति

1. भौतिक संस्कृति :– मानव अपनी आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए भौतिक वस्तुओं का प्रयोग करते है। जैसे :– अस्त्र, उपकरण, आभूषण, पोशाक तथा अन्य वस्तुओं

   भौतिक संस्कृति हम उसे कहेंगें जिसे हम छू सकते है। उपकरण, आभूषण, पोशाक इत्यादि यह सभी भौतिक अथवा मूर्त वस्तुएं भौतिक संस्कृति कहलाती है।?
2. अभौतिक :– अभौतिक संस्कृति हम उसे कहते है जो हम महसूस कर सकते है। ये हमारे अभौतिक पक्षों को बतलाता है। जैसे :– विश्वास, विचार, आदर्श, भवनाएँ, धर्म, रिति–रिवाज आदि जिसे हम देख नहीं सकते है सिर्फ महसूस कर सकते है।

संस्कृति की विशेषताएँ अथवा स्वभाव एवं गुण :?

संस्कृति के संबंध में विभिन्न मानवशास्त्रियों द्वारा प्रदत परिभाषाओं के अध्ययन से इसकी विशेषताएँ प्रकाश में आती है।

क) संस्कृति एक जटिल समग्रता है।
ख) संस्कृति सीखी जाती है।
ग) संस्कृति हस्तांतरित की जाती है।
घ) संस्कृति एक समाज की जीवन शैली है।
ङ) संस्कृति भौतिक एवं अभौतिक होती है।
च) संस्कृति आवश्यकता पूर्ति के साधन है।
छ) संस्कृति में अनुकूलन की क्षमता होती है।
ज) संस्कृति व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
झ) संस्कृति समूह के लिए आदर्श होती है।
ञ) संस्कृति एक प्रगतिशील प्रक्रिया है।

8.

9. शोध क्षेत्र में शोध कार्य का प्रयोग सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान से लेकर चिकित्सा और जैविक मानवशास्त्र के अन्य क्षेत्रों में अनुसंधान को पूरा करने के लिये किया जाता है। क्षेत्र कार्य का अभ्यास शहरी या ग्रामीण वातावरण आदिवासी समुदाय, संग्रहालय, पुस्तकालय, संस्कृतिक संस्थान, प्राइमेट संरक्षण क्षेत्र में किया जाता है।

प्रारंभिक मानवविज्ञानी ने अन्य सभ्यताओं, समुदायों, समाजों के लोगों एवं उनके सांस्कृतियों का दूसरे के द्वारा लिखित किताबों, विचारों तथा उन पर भरोसा करके अपने विषय वस्तु से संबंधित ज्ञान को आम लोगों तक पहुँचाया करते थे जो कि शोध की विश्वासनीयता और गुणवत्ता पर सवाल खड़े हो जाते थे। इन विद्वानों का सीधा संपर्क क्षेत्र कार्य के लोगों तक नहीं था जिसका वे अध्ययन करते थे। इस दृष्टिकोण को आर्मचेयर एंथ्रोपॉलाजी के रूप में जाना जाने लगा।

आर्मचेयर मानवविज्ञानी आमतौर पर 19 वीं सदी के अंत तक और 20 वीं सदी के शुरूआत विद्वानों को सामान्य मानवविज्ञान गतिविधियों फील्डवर्क या लैबवर्क के बीच निष्कर्ष पर पहुँच जाते थे। एल0एच0 मार्गन, जेम्स फ्रेजर, ई0 बी0 टॉयलर जैसे महान व्यक्ति इसके उदाहरण है वे छानबीन करने के लिए दूसरे की किताबों, विचारों का प्रयोग कर निष्कर्ष पर कल्पना करके मानवविज्ञान में अपना योगदान दिया।

एल0 एच0 मार्गन ने जो आँकड़े एकत्रित किये वो अपने सहयोगी पार्कर से पूछकर प्राप्त किये और उन्होंनें लीग ऑ फ ईराक्वीस किताब 1851 में लिखा।

ठीक उसी प्रकार ई0 बी0 टॉयलर ने अपने सहयोगी हेनरी क्रिस्टी से जानकरी प्राप्त कर 'मैक्सिको मेक्सिकन' पर किताब लिखी जो अनाहुअक के नाम से प्रकाशित हुआ। इन्हें ही आर्मचेयर की संज्ञा दी गयी।

मैलिनोवस्की उस समय तुलनात्मक संस्कृति का अध्ययन कर रहे थे तभी इन्होंनें आर्मचेयर मानवविज्ञानियों की प्रबल अलोचक थे। इन्होंनें संस्कृति की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन कर सांस्कृति का ऐतिहासिक पुर्ननिर्माण किया। इन्होंनें दैनिक लेखन, स्थैतिक लेखन, स्थानीय भाषा की जानकारी, कथनों का संकलन, मूल सूचनादाता का प्रयोग, सूचनाओं की सत्यता की परीक्षण, सहभागी अवलोकन, क्षेत्र में मूल तत्व है और क्षेत्र कार्य को मानव विज्ञान को आत्मा बताया है।

ब्रिटिश मानवविज्ञान के संस्थापकों में से एक ब्राउनिसला कास्पर मैलिनोवस्की ने सबसे पहले क्षेत्रकार्य किया। इन्होंनें 1914 ई0 से ट्रोविएंड द्वीप वासियों के अध्ययन के लिए 4 वर्षों की लंबी अवधि सन् 1918 ई0 तक किया।

उसके बाद आर्मचेयर एंथ्रोपोलोजिस्ट के आँखे खुली । अब अध्ययन के लिए कार्य क्षेत्र परंपरा सुनिश्चित हुआ।

क्षेत्रकार्य सबसे विशिष्ट प्रथओं में से एक है जो मानवविज्ञानी समाज में मानव जीवन के अध्ययन के लिए जाते है। क्षेत्रकार्य के माध्यम से सामाजिक मानवविज्ञानी सामाकि क्रिया और संबंधों के संदर्भ में विस्तृत एवं अंतरंग समझ की तलाश करता है।

जहाँ क्षेत्रकार्य संग्रहालयों, अभिलेखागार या सांस्कृतिक संस्थानों के भीतर आयोजित किया जाता है। जैविक मानवविज्ञान अक्सर संग्रहालय संग्रह में रखे मानव अवशेषों या कलाकृतियों पर अनुसंधान परियोजनाओं को आधार बनाते है।

मानववैज्ञानिक कई तरीकों से डेटा एकत्र कर सकते है सहभागी अवलोकन, असहभागी अवलोकन, अर्द्धसहभागी अवलोकन, साक्षात्कार, प्रश्नावली, समूह साक्षात्कार इत्यादि। सबसे महत्वपूर्ण सहभागी अवलोकन की परंपरा है। इससे विस्तृत, लम्बी जटिल टिप्पणीय के गहराई से अध्ययन करने में सक्षम बनाता है। दैनिक जीवन के क्रियाकलाप, उपचारिक समारोह, अनुष्ठानों में भाग लेकर समुदाय के इच्छुक सदस्य के विचारों पर चर्चा करके ही अनुभव के द्वारा डेटा प्राप्त करते है। जो शोध वर्णन में सहायक होता है।

लम्बी अवधि तक अवलोकन करने से शोध विषय पर वर्णन करना ज्यादा स्पष्ट विश्वसनीय हो जाता है। फील्डवर्क के बिना मानवविज्ञान अधूरा है।